राँची विश्वविद्यालय, राँची

(पीएच० डी० उपाधि के निमित्त प्रस्तुत शोध–प्रबंध की रूपरेखा)

हिन्दी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध विषय

हिन्दी उपन्यास विधा को सुरेन्द्र वर्मा का प्रदेय

2024

<u>शोध निर्देशिका</u>

डॉ. सुनीता कुमारी
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय राँची।
मो०:– 9470368260
7717705718

<u>शोध छात्रा</u>

कविता कुमारी
एम०ए०, हिन्दी (नेट उतीर्ण)
राँची विश्वविद्यालय, राँची।
मो० : 6205493502

हिन्दी उपन्यास विधा को सूरेन्द्र वर्मा का प्रदेय

प्रस्तावना – सभ्यता के विकास के साथ ही साथ साहित्य की अनेक विधाओं को विकास हुआ। कहानी कहना और सुनना मनुष्य का स्वभाव है, इसलिए उसका जन्म भाषा के जन्म के साथ हुआ होगा। यद्यपि कल्पना प्रसूत साहित्य में कथा साहित्य सर्वाधि प्राचीन समावेशी और संपन्न है तथापि उसके स्वतंत्र अस्तित्व और आधुनिक रूप आधुनिक सभ्यता की उपज है।

गद्य की अनेक विधाओं की तरह हिन्दी उपन्यास भी आधुनिक युग की ही देन है। कुछ आलोचक संस्कृत के कादम्बरी आदि कथा ग्रंथ को उपन्यास कहते हैं और आधुनिक उपन्यासों की परंपरा भी वहीं से मानते हैं। लेकिन संस्कृत की कथाओं में आधुनिक उपन्यास के तत्वों को अभाव हैं वास्तविकता तो यह है कि हिन्दी का उपन्यास साहित्य का वह पौधा है जिसे याद सीधे पश्चिम से नहीं लिया गया हो तो उसका कलम बंगला से तो लिया गया होगा। बंगला के उपन्यासों का सीधा प्रत्यक्ष और पर्याप्त प्रभाव हिन्दी उपन्यासों पर पड़ा हैं हिन्दी उपन्यासों की सर्वप्रथम रचना हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के भारतेन्दु युग में ही हुई और तब से आज तक उसकी अखंड परंपरा चली आ रही है। सुविधा की दृष्टि से इसके विकास को तीन कालखंडों में बांटा जा सकता है। हिन्दी में प्रेमचंद उपन्यास सम्राट के रूप में समादृत है। हिन्दी में प्रेमचंद में अनेक उपन्यासों की रचना कर उपन्यास साहित्य को समृद्ध किया यथा निर्मला, प्रतिज्ञा,

वरदान, सेवासदन, कर्मभूमि, गबन, गोदान आदि। प्रेमचंद का गोदान हिन्दी का श्रेष्ठतम उपन्यास माना जाता है। यह भारतीय संस्कृति की महागाथा है। उन्होंने लगभग 300 कहानियों की रचना की जो 'मानसरोवर' नाम से आठ भागों में प्रकाशित है। अतः प्रेमचंद उपन्यास साहित्य उत्कृष्टता को प्राप्त कर कृतार्थ होता है। अतः प्रेमचंद को केन्द्र मानकर उपन्यास की तीन परंपराये मानी जा सकती है– प्रेमचंदपूर्व, प्रेमचंदयुगीन, प्रेमचंदोत्तर सुरेन्द्र वर्मा प्रेमचंदोत्तर काल के एक प्रतिनिधि साहित्यकार है जिन्होंने अनेक उपन्यासों और नाटकों की है। इनका जन्म 7 सितम्बर 1941 में हुआ था। इन्होंने भाषा विज्ञान में एम. ए. किया और भाषा शास्त्र का एक व्यापक समझदारी विकसित कीं बचपन से ही ये कुशाग्र बुद्धि के रहे और भाषा विज्ञान जैसे विषय में एम. ए. की उपाधि प्राप्त करना आसान नहीं है लेकिन इन्होंने अपनी उच्च शिक्षा का विषय भाषा विज्ञान को ही चुना और प्रथम श्रेणी में उतीर्णता प्राप्त की।

छात्र जीवन से ही साहित्य में उनकी गहरी रूचि रही। सुरेन्द्र वर्मा बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार रहे हैं। प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय इतिहास सभ्यता और संस्कृति, हिन्दी नाटक एवं रंगमंच और अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा में इनकी गहरी रूचि रही। सर्वप्रथम ये नाटक की ओर अग्रसर हुए। इन्होंने हिन्दी नाटकों के विकास परंपरा का गहरा अध्ययन किया। उनका पहला नाटक जब प्रकाशित हुआ उसी समय वे चर्चा के केन्द्र में आ गये। द्रौपदी' उनका पहला नाटक है जो 1970 में पहली बार प्रकाशित हुआ। इस नाटक के

माध्यम से इन्होंने आज की सामाजिक विसंगतियों के साथ यौन कुंठाओं को उजागर करने की चेष्टा की है। प्रभाव की दृष्टि से उनकी तुलना आधुनिक युग के याशस्वी नाटककार मोहन राकेश से की जा सकती है। मोहन राकेश की तरह उन्होंने जिन्दगी की तल्ख सच्चाइयों को अत्यन्त बारीकी के साथ अपनी रचनाओं में उभारा है। अपने पहले नाटक के द्वारा उन्होंने जिस रंग चेतना की तलाश शुरू की वह धीरे–धीरे उनका प्राप्त होती गई। हिन्दी नाट्य भाषा के विकास में उनका अप्रतिम योगदान है। उनकी भाषा समकालीन जीवन के यथार्थ को मुखर करने में पूरी तरह सक्षम है। उनके प्रमुख नाटक हैः– द्रौपदी (1970), सूर्य की अंतीम किरण स पहली किरण तक (1972), नाटक, खलनायक, विदूषक, आठवां सर्ग (1976), शकुंतला की अंगूठी, रति का कंगन, कैद–ए–ह्यात नींद क्यों रात भी नहीं आती (एकांकी संग्रह) 1980।

एक व्यंग्य संग्रह – जहाँ बारिश न हो

दो कहानी संग्रह – प्यार की बातें, कितना सुंदर जोड़ा।

उपयुक्त नाटकों, एकांकियों और कहानी संकलनों के अतिरिक्त सुरेन्द्र वर्मा जी ने कथा साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी लेखनी चलायी है। उनका एक कहानी संग्रह–प्यार की बातें तथा अन्य कहानियाँ प्रकाशित हैं। इसमें अनेक कहानियाँ है लेकिन सर्वाधिक महत्वपूर्ण कहानी–प्यार की बाते हैं। इस कहानी में प्रेमी और प्रेमिका के माध्यम से प्रेम के महत्व को स्थापित किया गया है। सुरेन्द्र वर्मा के कुल चार उपन्यास प्रकाशित है–

1. अँधेरे से परे – 1980

2. मुझे चाँद चाहिए – 1993

3. दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता – 1998

4. काटना शमी के वृक्ष : पद्म–पँखुरी की धार से–2011

जिस प्रकार हिन्दी उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद ने अनेक उपन्यासों के माध्यम से हिन्दी उपन्यास साहित्य को समृद्ध किया लेकिन 'गोदान' के कारण उन्हें लोकप्रियता और अमरता प्राप्त हुई, उसी प्रकार यद्यपि कि सुरेन्द्र वर्मा ने चार उपन्यासों का प्रणयन किया है लेकिन उपन्यासकार के रूप में उनकी लोकप्रियता एवं ख्याति का एकमात्र आधार मुझे चाँद चाहिए' आधृत है।

'मुझे चाँद चाहिए' एक महत्वाकांक्षी कलाकार की संघर्ष गाथा है। यह संघर्ष दोहरा है। व्यक्ति के रूप में उस पारिवारिक–सामाजिक परिवेश और कालाबाजार की प्रतिकूल परिस्थितियो से जूझना पड़ता है और कलाकार के रूप में अपनी प्रतिभा और कला क्षमता के बल पर कला परिवेश से संतुलन स्थापित करते हुए उच्चतम कला मूल्यों की उपलब्धि के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इस संघर्ष गाथा को वर्षा–वशिष्ट और उसके प्रेमी हर्षवर्धन दोनों की संघर्ष कथाएँ मिलकर पूर्णतः प्रदान करती है। असंभव को साधने के प्रयत्न में हर्षवर्धन जैसा प्रतिभा संपन्न कलाकार अंततः आत्महत्या कर लेता है। किंतु इसी प्रयत्न में वर्षावशिष्ठ शाहजहाँपुर जैसे एक कस्बे से निकलकर अपनी

प्रतिभा इच्छाशक्ति, विवेक तथा चरित्र की नमनीयता के बल पर पूर्णतः सफल होती है। वह बुलंदियों की चाँद को छू लेती है। उसकी दृष्टि में जिंदगी बड़े से बड़े कला मूल्य से अधिक मूल्यवान है। आत्महत्या कोई समाधान नहीं है। इस उपन्यास के संबंध में प्रख्यात समीक्षक श्याम कश्यम की निम्नलिखित टिप्पणी महत्वपूर्ण है– "जीवन यथार्थ की गहरी सूझ–बूझ की कलात्मक चित्रण में सूक्ष्म से सूक्ष्म डिहेल्स का सटीक वर्णन और भाषा से लेकर गद्य शैली तक हिन्दी को लगभग एक नया संस्कार देने की उनकी कोशिश, सर्वोपरि सुरेन्द्र वर्मा को सकारात्मक जीवन दृष्टि उन्हें निर्विवाद रूप से एक बड़ा लेखक एवं सक्षम कलाकार साबित करती है।" (समीक्षा – डॉ० गोपाल राय, वर्ष 27, अंक 2)

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' लिखकर सुरेन्द्र वर्मा ने उपन्यासकार के रूप में अपनी प्रतिष्टा को पीछे ढकेल दिया है। इस उपन्यास में दिल्ली के एक शोध–छात्र और मथुरा के एक चौकीदार के बहाने बम्बई की भयानक अपराध और कुत्सित सेक्स की दुनिया का चित्रण किया गया है। उपन्यास में अपराध की भयानक दुनिया के साथ समृद्ध नारियों के अतृप्त सेक्स जीवन की पुष्टि के निमित पुरूष–वेश्या के सेक्स प्रसंगों के जो रंगीन चित्र खिंचे गए है; वे यदि किसी हद तक सच भी हों, तो सामाजिक प्रतिबद्धता और कलात्मक संयम से रहित इस उपन्यास को लेकर सुरेन्द्र वर्मा ने कौन–सी उपलब्धि हासिल की है? यह समझ से परे है। मुझे लगता है कि निश्चित ही समझ से परे है। मुझे लगता है कि

निश्चय ही यह उपन्यास उपभोक्त–संस्कृति के दबाव में शुद्ध व्यावसायिक प्रयोजन से लिखा गया है।

इसी प्रकार अंधेरे से परे (1980) और काटना शमी का वृक्ष:पद्यमपंखुरी की धार से (2011) लिखकर सुरेन्द्र वर्मा ने हिन्दी उपन्यास परंपरा को समृद्ध किया है। नाटककार के रूप में उन अनेक शोध–कार्य हुए हैं लेकिन उपन्यासकार के रूप में उन पर अभी तक मुकम्मल शोध कार्य नहीं हुआ है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में हमारा उद्देश्य उनके उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है।

शोध की परिकल्पना

छात्र–जीवन से ही मेरा झुकाव साहित्य की और उसमें भी हिन्दी साहित्य की ओर विशेष रूप से रही है, यही वजह है कि मैं निरंतर साहित्य की ओर आकर्षित होती रही। अध्ययन के क्रम में मेरी अभिरूचि गद्य–साहित्य के प्रति कुछ विशेष रही। अध्ययन के क्रम में अनेक उपन्यासकारों को पढ़ने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ, लेकिन सुरेन्द्र वर्मा का उपन्यास "मुझे चाँद चाहिए" ने मुझे काफी प्रभावित किया। संयोगवश उनकी कुछ कहानियों और उनके अन्य उपन्यासों को भी पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसे पढ़कर मैंने सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यास–साहित्य पर शोध–कार्य करने का संकल्प लिया। अतएव इसी उद्‌देश्य की पूर्त्ति के लिए मैंने हिन्दी उपन्यास परंपरा को सुरेंद्र वर्मा का प्रदेय पर

शोध करने का विचार किया। इस तरह मेरी परिकल्पना शोध की स्थायी जमीन पा गयी और प्रारूप तैयार हुआ।

शोध का महत्व

साहित्य में शोध का अपरिमित महत्व है। शोध का उद्‌देश्य सत्य और ज्ञान का प्रसार है। इस कार्य से रचनाकार को और उनकी रचनाओं को विस्तार के भूखण्ड कर रूपायित होने का सुदृढ़ आयाम मिल जाता है। सुरेन्द्र वर्मा के कथा–साहित्य में उपन्यास बहुत ही विचारोत्तेजक है। उन्होंने अपने कथा–साहित्य में स्त्री–विमर्श एवं नारी–मुक्ति को भरपूर स्थान दिया है। उनके कथा–साहित्य की स्त्रियाँ मूक नहीं, बल्कि मुखर एवं प्रगल्भा हैं जो समाज की गली–सड़ी मान्यताओं तथा धारणाओं को विद्रोह करके समाज में अपनी निजी अस्मिता एवं पहचान स्थापित करना चाहती हैं। इस तरह यह शोध–कार्य मेरे लिए ज्यादा महत्व रखता है।

शोध का उद्‌देश्य

वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों में व्यक्त की गई संवेदनाओं को सरलतापूर्वक समझना, समझाना, उनके जीवन में आने वाली समस्याओं का सरल समाधान निकालना, समाज में स्त्रियों का समान हक और समान प्रतिष्ठा दिलाना तथा स्त्रियों की प्रतिभा को ऊँचाई की उड़ान तक पहुँचाना ही मेरे शोध–प्रबंध का उद्देश्य है।

हमारे शोध का उद्‌देश्य सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों के वैशिष्टय को रेखांकित करना और हिन्दी उपन्यास साहित्य में उनके प्रदेय को स्थापित करना है।

शोध की प्रासंगिकता

विश्व की हर भाषा की अपनी साहित्यिक समृद्धियाँ हुआ करती हैं और उनके युग–सापेक्षता की उपस्थिति भी रहा करती है। प्रत्येक युग के साहित्य में स्त्री–पुरुष के संबंधों का विषय वस्तु भी उपलब्ध है। समाज में पुरुष का वर्चस्व आदिकाल से ही रहा है, किन्तु वर्त्तमान समय इसको उलटने का भरपूर प्रयास कर रहा है। स्त्रियाँ जागृत हो रही हैं और समाज में अपनी पुष्ट भूमिका भी दे रही हैं। उनका स्वरूप केवल जाया, जननी और माननी तक ही नहीं, बल्कि करणी तक आ पहुँचा है और वे पुरुषों के समतुल्य खड़ी हो पा रही हैं। साथ ही कतिपय क्षेत्रों में आगे भी हैं। नारी सशक्तिकरण के युग में उनकी प्रेरणा को और बलवती बनाने के लिए कर्तव्य–भूमि पर उनकी सत्वर गतिमानता के लिए हृदय में साहस और प्रतिकूल परिस्थितियों के साथ समायोजन के लिए उन्हें विचारात्मक बल प्रदान करना ही सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों का अभिष्ट रहा है। हिन्दी उपन्यास परंपरा को सुरेन्द्र वर्मा का अभूतपूर्व योगदान रहा है। हिन्दी उपन्यासों की जो परंपरा जो लाला श्रीनिवासदास के परीक्षा गुरू से शुरू हुई और कथा सम्राट प्रेमचंद से होते हुए सुरेन्द्र वर्मा तक पहुँची वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिन्दी की उपन्यास विधा में सुरेन्द्र वर्मा के प्रदेय को रेखांकित करना– इस शोध की प्रासंगिकता है।

शोध की समस्या

आज के दौर में पुस्तकों को पुनर्संस्करण नहीं होने से उनकी सहज प्राप्ति नहीं हो पाती है, फलतः संबंधित विषयों के शोधार्थियों को काफी भाग–दौड़ करनी पड़ती है। पुस्तकालयों का अभाव, पुस्तकालयों में पुस्तकों का अभाव और पाठकों का अभाव, ये तीनों ही शोध की समस्या के एक बड़े कारण हैं।

शोध प्रविधि

शोध–कार्य में शोध प्रविधि का विशिष्ट महत्व और उपादेयता है। पूँजी तो मूल रचना की होती है, किन्तु सृजन के अध्ययनोपरान्त उसका विश्लेषण, उसकी समीक्षा, उसका प्रबोध और सबसे अधिक रचना–विशेष की प्रासंगिकता की विश्लेषणात्मक व्याख्या की आवश्यकता होती है जिसमें पर्याप्त आकर्षण, अनुरंजन तथा परिज्ञान की अनिवार्यता भी अपेक्षित है। शोध प्रविधि के अंतर्गत विश्लेषणात्मक, समीक्षात्मक, वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक आदि विधियाँ हैं। आवश्यकतानुसार मैं अपने शोधकार्य में इन विधियों का प्रयोग करूँगी। इस शोध प्रबंध को मैंने छः अध्यायों में विभक्त किया है। प्रथम अध्याय में सुरेन्द्र वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला जाएगा। द्वितीय अध्याय में हिन्दी उपन्यास साहित्य का आर्विभाव एवं विकासात्मक परिचय पर विचार किया जाएगा। तृतीय अध्याय में हिन्दी उपन्यास साहित्य को सुरेन्द्र वर्मा के प्रदेय को रेखांकित किया जाएगा। चतुर्थ अध्याय में सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों का वैशिष्ट्य पर विचार किया जाएगा। पाँचवे

अध्याय में समकालीन उपन्यासकारों में सुरेन्द्र वर्मा का स्थान पर विवेचना की जायेगी। षष्टम अध्याय में सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों की भाषा शैली पर विचार किया जाएगा। अंत में शोध निष्कर्ष और संदर्भ ग्रंथों की सूची रहेगी।

शोध प्रारूप

विषय सूची

प्रथम अध्यायः—सुरेन्द्र वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(क) लेखक का जीवन परिचय

(ख) उपन्यासकार के रूप में सुरेन्द्र वर्मा

(ग) नाटककार के रूप में सुरेन्द्र वर्मा

(घ) अन्य विधाओं के लेखक के रूप में सुरेन्द्र वर्मा

द्वितीय अध्यायः—हिन्दी उपन्यास साहित्य का आर्विभाव एवं विकासात्मक परिचय

(क) उपन्यास : परिभाषा एवं अवधारणा

(ख) प्रेमचंदपूर्व उपन्यास साहित्य

(ग) प्रेमचंद कालीन उपन्यास

(घ) प्रेमचंदोत्तर उपन्यास साहित्य

(ङ) समाकालीन उपन्यास

तृतीय अध्यायः—हिन्दी उपन्यास साहित्य को सुरेन्द्र वर्मा का प्रदेय

(क) उपन्यासों का विषयगत प्रदेय

(ख) भावगत एवं वैचारिक प्रदेय

(ग) परंपरा और आधुनिक बोध

(घ) भाषागत विश्लेषण

चतुर्थ अध्यायः—सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों का वैशिष्टय

(क) कथागत वैशिष्ट्य

(ख) उद्देश्यगत वैशिष्ट्य

(ग) सामाजिक एवं राजनीतिक वैशिष्ट्य

(घ) स्त्री विमर्शमूलक वैशिष्ट्य

पंचम अध्यायः—समकालीन उपन्यासकारों में सुरेन्द्र वर्मा का स्थान

(क) संजीव

(ख) अभिमन्यु अनंत

(ग) मनोहर श्याम जोशी

(घ) गोविन्द मिश्र

षष्टम अध्यायः—सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों की भाषा शैली

(क) प्रयुक्त भाषाशैली का प्रकार

(ख) भाषा शैली की विशिष्टताएँ

(ग) संवाद योजना की विशिष्टताएँ

उपसंहार/शोध निष्कर्ष

आधार ग्रंथों की सूची

संदर्भ ग्रंथों की सूची

आधार एवं संदर्भ ग्रंथों की सूची :–

आधार ग्रंथ की सूचीः–

1. अंधेरे से परे – सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1980

2. मुझे चाँद चाहिए – सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1993

3. दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता – सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1998

4. कितना सुंदर जोड़ा – सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1974

5. प्यार की बातें – सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1975

6. जहाँ बारिश न हो – सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1975

7. बम्बई भित्तिलेख – सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1976

8. सूर्य की अंतिम किरण से पहली किरण तक –सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, 1972

9. द्रौपदी – सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली 1972

10. नायक खलनायक – सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1972

11.आठवाँ सर्ग – सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1972

12. शकुन्तला की अँगूठी – सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1990

13. तीन नाटक – सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1999

14. छोटे सैय्यद बड़ै सैय्यद– सुरेन्द्र वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1991

15. काटना शमी के वृक्ष : पद्य–पँखुरी की धार से, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2011

संदर्भ सूची :–

1. मिश्र वीरेन्द्र कुमार –हिन्दी एकांकी : उद्भव और विकास, कोणार्क प्रकाशन, दिल्ली, 1984
2. नगेन्द्र – भारतीय नाट्य–सिद्धांत, गोविन्ददास हीरक जयंती समारोह समिति, दिल्ली।
3. ओझा डॉ. दशरथ – हिन्दी नाटकः उद्भव और विकास, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली,1984
4. ओझा डॉ. मान्धाता – हिन्दी समस्या–नाटक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1988
5. नलिन श्री जयनाथ – हिन्दी नाटकाार – आत्मारा एण्ड सन्स, दिल्ली,1961
6. मिश्र डॉ. विश्वनाथ – हिन्दी नाटकों पर पाश्चात्य प्रभाव– लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,1966
7. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी,1950
8. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास – नेश्नल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,1980
9. दास श्री कृष्ण – हमारी नाट्य परम्परा – साहित्यकार संसद, प्रयाग,1950
10. त्रिपाठी डॉ. सत्यवती – आधुनिक हिन्दी नाटकों में प्रयोगधर्मिता – राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1991
11. लाल डॉ. लक्ष्मीनारायण – आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, 1999
12. राय नरनारायण – हिन्दी नाटक और नाट्य समीक्षा – स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1978